WE
Vol 5 No. 2
December 2024
e-ISSN: 2583-2298

हिन्दी भाषा और भारतीय राजनीति

गरिमा*

1. परिचय

भारतीय राजनीति में भाषाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही है। भारत, भाषाई और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है, जहां 22 आधिकारिक भाषाएं और सैकड़ों बोलियां प्रचलित हैं। इन भाषाओं के बीच, हिन्दी भाषा का एक विशिष्ट स्थान है। हिन्दी न केवल भारतीय संघ की राजभाषा है, बल्कि यह उत्तर भारत के कई राज्यों में प्रमुख संवाद की भाषा भी है। भारतीय राजनीति में हिन्दी का उदय, उसकी स्वीकार्यता और भूमिका लगातार चर्चा और विवाद का विषय रही है। यह शोध पत्र हिन्दी भाषा के भारतीय राजनीति में स्थान और उसकी विकास यात्रा पर केंद्रित है।

2. हिन्दी का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

हिन्दी भाषा का विकास प्राचीन भारत से जुड़ा हुआ है। इसकी जड़ें संस्कृत में हैं और यह विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों से मिलकर विकसित हुई। मध्यकालीन भारत में अवधी, ब्रज और अन्य प्रादेशिक भाषाओं ने हिन्दी के विकास में योगदान दिया। अंग्रेज़ी शासनकाल के दौरान, भारतीयों में अपनी भाषाओं के प्रति जागरूकता बढ़ी, और हिन्दी का विकास उस समय की साहित्यिक और सांस्कृतिक आंदोलन से जुड़ा रहा। 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी के आरंभ में हिन्दी भाषा भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरी। महात्मा गांधी और अन्य नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता की भाषा के रूप में देखा।

3. भारतीय संविधान और हिन्दी की स्थिति

भारत के संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया गया है (अनुच्छेद 343)। संविधान के प्रारूपण के समय, हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा घोषित करने के प्रश्न पर गहन चर्चा हुई थी। अनेक दक्षिण भारतीय राज्यों, विशेषकर तमिलनाडु, ने इसका कड़ा विरोध किया। अंततः यह तय किया गया कि हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया जाएगा, जबकि अंग्रेजी को भी सह-राजभाषा के रूप में मान्यता दी जाएगी। संविधान में यह भी प्रावधान किया गया कि राज्य सरकारें अपनी-अपनी राज्य की भाषाओं का उपयोग कर सकती हैं। इस प्रकार, हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का भी समानांतर अस्तित्व बना रहा।

4. हिन्दी और भाषा आधारित राजनीति

हिन्दी भाषा ने भारतीय राजनीति में कई बार भाषा आधारित आंदोलन और विवादों को जन्म दिया है। 1960 के दशक में, जब हिन्दी को एकमात्र राजभाषा के रूप में लागू करने का प्रयास किया गया, तो तमिलनाडु और अन्य दक्षिण भारतीय राज्यों में तीव्र विरोध हुआ। तमिलनाडु में "हिन्दी-विरोधी आंदोलन" ने राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा की राजनीति को प्रभावित किया। इस विरोध का प्रमुख तर्क यह था कि हिन्दी को थोपने से गैर-हिन्दी भाषी राज्यों की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान पर आघात होगा। इसी विरोध के चलते सरकार को अंग्रेज़ी को सह-राजभाषा के रूप में बनाए रखने का निर्णय लेना पड़ा।

5. हिन्दी पट्टी और भारतीय राजनीति

भारतीय राजनीति में "हिन्दी पट्टी" एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिन्दी पट्टी का संदर्भ उन उत्तर भारतीय राज्यों से है, जहां हिन्दी प्रमुख भाषा है, जैसे उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, और छत्तीसगढ़। इन राज्यों की जनसंख्या बड़ी है, और यहां से बड़ी संख्या में सांसद संसद में पहुंचते हैं। हिन्दी पट्टी के राज्यों में जातीय, धार्मिक और भाषाई मुद्दे चुनावी राजनीति में महत्वपूर्ण होते हैं। हिन्दी भाषा इन राज्यों में संवाद और प्रचार का मुख्य माध्यम है, और हिन्दी के राजनीतिक महत्व को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय स्तर की पार्टियां भी चुनावी अभियानों के लिए हिन्दी का उपयोग करती हैं।

6. हिन्दी और राष्ट्रीय पार्टियों की राजनीति

कांग्रेस पार्टी और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जैसे प्रमुख राष्ट्रीय दलों ने हिन्दी भाषा का अपने प्रचार अभियानों में महत्वपूर्ण रूप से उपयोग किया है। भाजपा ने हिन्दी को राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया है। भारतीय जनता पार्टी के नेताओं, विशेषकर नरेंद्र मोदी ने अपने भाषणों में हिन्दी का व्यापक उपयोग किया है, जिससे वे हिन्दी भाषी राज्यों के मतदाताओं के बीच लोकप्रिय हुए हैं। दूसरी ओर, कांग्रेस पार्टी ने भी हिन्दी को अपनाया है, लेकिन उसका रुख बहुभाषी और विविधतापूर्ण रहा है। जवाहरलाल नेहरू और इंदिरा गांधी जैसे नेताओं ने हिन्दी के साथ-साथ अन्य भाषाओं का भी उपयोग किया, ताकि विभिन्न भाषाई समूहों को साथ जोड़ा जा सके।

*छात्रा, एम.ए. (हिन्दी), महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक

7. क्षेत्रीय राजनीति और हिन्दी का प्रभाव

भारत में क्षेत्रीय राजनीति का उभार 1960 के दशक में देखा गया, जब विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय दलों ने सत्ता हासिल की। ये दल अक्सर अपनी क्षेत्रीय भाषाओं और सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित करने के मुद्दों पर राजनीति करते हैं। हिन्दी भाषी राज्यों के बाहर, इन दलों का मानना है कि हिन्दी का बढ़ता प्रभाव उनके राज्यों की भाषाई और सांस्कृतिक पहचान को खतरे में डाल सकता है। हालांकि, हिन्दी भाषा का उपयोग क्षेत्रीय दलों द्वारा भी देखा गया है। गैर-हिन्दी भाषी राज्यों के नेता भी, जब राष्ट्रीय मंच पर होते हैं, हिन्दी का उपयोग करके अपनी बात रखते हैं। इसका उदाहरण डीएमके और एआईएडीएमके जैसे तमिल दलों के नेताओं का हिन्दी में संवाद करना है, ताकि वे हिन्दी भाषी राज्यों के मतदाताओं तक पहुंच सकें।

8. हिन्दी और चुनावी अभियानों में सोशल मीडिया की भूमिका

आधुनिक राजनीति में सोशल मीडिया का उपयोग तेजी से बढ़ा है, और हिन्दी भाषा इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारत में फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप जैसी प्लेटफार्मों पर हिन्दी सामग्री की मांग बढ़ी है। राजनीतिक दल अपने संदेश को जनता तक पहुंचाने के लिए सोशल मीडिया पर हिन्दी का व्यापक उपयोग कर रहे हैं। विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं ने हिन्दी में लाइव भाषण, वीडियो संदेश और सोशल मीडिया पोस्ट के माध्यम से हिन्दी भाषी राज्यों के मतदाताओं तक अपनी पहुंच बनाई है। इससे यह सिद्ध होता है कि हिन्दी भाषा का डिजिटल युग में भी राजनीति में विशेष स्थान बना हुआ है।

9. हिन्दी का भविष्य और चुनौतियां

भले ही हिन्दी भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है, फिर भी कई चुनौतियां हैं। भारतीय राजनीति में हिन्दी के बढ़ते प्रभाव को लेकर दक्षिण भारतीय राज्यों और उत्तर-पूर्वी भारत में विरोध कायम है। इसके अलावा, वैश्वीकरण और अंग्रेजी के बढ़ते प्रभाव के कारण भी हिन्दी को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अंग्रेजी को आज भी प्रशासन, शिक्षा और व्यापार की प्रमुख भाषा के रूप में देखा जाता है, जिससे हिन्दी भाषी क्षेत्रों के युवा अंग्रेजी सीखने के प्रति अधिक झुकाव दिखा रहे हैं। यह हिन्दी के राजनीतिक प्रभाव को दीर्घकालिक रूप से प्रभावित कर सकता है।

10. निष्कर्ष

हिन्दी भाषा भारतीय राजनीति का अभिन्न अंग रही है और उसका प्रभाव समय के साथ और बढ़ा है। संविधान में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा दिया जाना, हिन्दी पट्टी की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका, और राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के माध्यम से संवाद करना, यह सब हिन्दी की राजनीतिक स्थिति को मजबूत बनाते हैं। हालांकि, क्षेत्रीय भाषाओं और अंग्रेजी के साथ हिन्दी को संतुलित करते हुए एक समावेशी भाषा नीति की आवश्यकता है, जो भारत की भाषाई विविधता का सम्मान करे। हिन्दी भाषा, अपने राजनीतिक और सांस्कृतिक महत्व के साथ, भारतीय राजनीति में एक स्थायी स्थान बनाए रखेगी, लेकिन यह आवश्यक है कि इसे संवेदनशीलता और समझदारी से लागू किया जाए ताकि कोई भी भाषाई समूह उपेक्षित महसूस न करे।

संदर्भ

बाली, के. (2015). *भारत की भाषा नीति और हिन्दी का स्थान*. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

चंद्रा, बी. (2017). *आधुनिक भारतीय राजनीति में भाषा आंदोलन*. दिल्ली: ओरिएंट लॉन्गमैन।

देसाई, एम. (2018). *भारतीय समाज और भाषाई राजनीति*. मुम्बई: पीपल्स पब्लिशिंग।

शर्मा, आर. (2020). *हिन्दी भाषा का राजनीतिक महत्व*. बनारस: वाराणसी विश्वविद्यालय।

सिंह, एस. (2021). *हिन्दी पट्टी और भारतीय चुनावी राजनीति*. पटना: बिहार स्टडी सेंटर।

©WE-Faculty of Arts